ISSN: 0973-0583

# भारत चीन सम्बन्ध : एक ऐतिहासिक अवलोकन

**अनुप राज**
**शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना**
**डॉ0 सुरेन्द्र कुमार**
**एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना**

## शोध सार

भारत–चीन संबंध एक जटिल और बहुआयामी आख्यान है जिसमें सांस्कृतिक आदान–प्रदान, व्यापार, संघर्ष और आधुनिक भू–राजनीतिक गतिशीलता शामिल है। प्राचीन समय में दोनों सभ्यताओं के बीच संबंध मुख्य रूप से व्यापार और बौद्ध धर्म के प्रसार से प्रेरित थी। मध्यकाल में प्रत्यक्ष संपर्क समिति था लेकिन यात्रियों और विद्वानों के माध्यम से सांस्कृतिक और बौद्धिक आदान–प्रदान जारी रहा। औपनिवेशिक युग ने उनके संबंधों में नए आयाम लाए। स्वत्रंता के बाद भारत और चीन ने शुरू में नव उपनिवेशित राज्यों के रूप में एकजुटता की मांग की लेकिन क्षेत्रीय विवादों ने जल्द ही उकने संबंधों में तनाव पैदा कर दिया जिसके कारण 1962 में भारत–चीन युद्ध हुआ। समकालीन समय में भारत–चीन संबंधों में प्रतिस्पर्धा और सहयोग है जो उनकी संबंधित क्षेत्रीय और वैश्विक आकांक्षाओं से प्रभावित है। यह लेख भारत–चीन संबंधों के ऐतिहासिक और समकालीन आयामों का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करता है जिसमें उन प्रमुख चरणों और विकास पर प्रकाश डाला गया है जिन्होंने उनकी बातचीत की वर्तमान स्थिति को आकार दिया है।

**शब्द कुँजी: परस्पर निर्भरता, रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता, राजनायिक जुड़ाव, द्विपक्षीय विवाद**

**भूमिका:**

दुनिया की सबबे पुरानी और सबसे महत्वपूर्ण सभ्यताओं में से दो भारत और चीन के बीच परस्पर संबंधों का एक लंबा और जटिल इतिहास है। सिल्क रोड व्यापार मार्गो का एक प्राचीन नेटवर्क दोनों सभ्यताओं के बीच वस्तुओं, विचारों और धार्मिक विश्वासों के आदान–प्रदान की सुविधा प्रदान करता था। मध्ययुगीन काल के दौरान दोनों देशों के बीच प्रत्यक्ष संपर्क समिति थे लेकिन अप्रत्यक्ष सांस्कृतिक और बौद्धिक आदान–प्रदान जारी रहे। यात्रियों विद्वानों और भिक्षुओं ने इस सांस्कृतिक पुल को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। औपनिवेशिक युग में नए व्यापार पैटर्न और भू–राजनीतिक विचारों की शुरुआत देखी गई जिसने भारत और चीन के बीच पारंपरिक संबंधों को प्रभावित किया। 20वीं सदी के मध्य में भारत–चीन संबंधों में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया क्योंकि दोनों देश औपनिवेशिक शासन से उभरे। प्रारंभ से दोनों देशों के बीच एकजुटता की भावना थी जो उपनिवेशवाद के साझा अनुभवों और साम्राज्यवाद–विरोधी एक सामान्य दृष्टिकोण से प्रेरित थी। क्षेत्रीय विवादों विशेषकर हिमालय की सीमाओं के कारण 1962 में भारत–चीन युद्ध हुआ। इस संघर्ष ने द्विपक्षीय संबंधों पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा जिसके परिणामस्वरूप दशकों तक आपसी संदेह और रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता बनी रही। बढ़ते आर्थिक संबंधों ने समकालीन भारत–चीन संबंधों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान समय में भारत–चीन संबंधों की विशेषता प्रतिस्पर्धा और सहयोग पर टिकी है।

**प्राचीन काल में भारत–चीन सम्बन्ध :**

दोनों देशों के हजारों वर्ष पुराने सम्बन्ध है। महाभारत में मानसरोवर और चीन देश का उल्लेख मिलता है। एक सहस्त्राब्दी पूर्व भारत से दो सौ से अधिक विद्वान चीन गए और वहां बौद्ध मत का प्रचार किया। फाह्यान, ह्वेनसांग, इत्सिंग जैसे सैकड़ों चीनी तीर्थयात्री नालंदा विश्वविद्यालय में बौद्ध धर्म के अध्ययन के लिए आते रहे। कुमारजीव को तुंग वंश के राजा ने राजगुरु की उपाधि दी। महायान बौद्ध धर्म चीन के कन्फ्यूशीवाद और ताओवाद के साथ चीनी समाज में ठीक–ढ़ंग से स्थापित हो गया। चीन के कुछ राजवंशों ने भारत के बौद्ध धर्म भिक्षुओं और विद्वानों को संरक्षण दिया। बोधिधर्म (पल्लव राजकुमार) जो वाद में बौद्ध भिक्षु बने ने 5वीं शताब्दी में कुंगफू से चीन का परिचय करवाया। दोनों के बीच सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध दो हजार ई.पू. से प्राप्त किए जा सकते हैं। चीन और भारत के मध्य व्यापार का रिश्ता सिल्क रोड के जरिए फलता–फूलता रहा जो दोनों देशों के

मध्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान का बेहतर संपर्क साबित हुआ।

**मध्य काल में भारत-चीन सम्बन्ध :** मध्यकाल में भारत-चीन के बीच व्यापारिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक संबंध जारी थे। यात्रियों, विद्वानों और भिक्षुओं ने इस सांस्कृतिक पुल को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**औपनिवेशिक काल में भारत-चीन सम्बन्ध :**

ब्रिटिश उपनिवेशवाद के दौरान भी चीन-भारत के व्यापारिक संबंध थे लेकिन उसका स्वरूप बहुत समिति था। भारत और चीन दोनों एक-दूसरे के शक्तिशाली राष्ट्रवादी आंदोलन को सहानुभूति और प्रशंसा की दृष्टि से देखते थे। जवाहरलाल नेहरू 1927 में ब्रुसेल्स में आयोजित साम्राज्यवाद-विरोधी सम्मेलन में भाग लेने आए और चीनी कम्युनिष्ट आंदोलन की ओर आकर्षित हुए जिसने चीन की मुक्ति के लिए लड़ाई लड़ी। नेहरू ने चीन और भारत तथा अन्य पूर्वी देशों के पूर्वी संघ की अवधारणा पर विचार किया। राष्ट्रवादी नेता चियाग-काई-शेक ने फरवरी 1942 में भारत का दौरा किया। उन्होंने अमेरिकी सरकार से भारत पर अपनी पकड़ ढ़ीली करने के लिए अंग्रेजों पर दबाव डालने का अनुरोध किया। इस प्रकार भारत और चीन के मन में एक दूसरे के प्रति बहुत सम्मान था। 200 से अधिक वर्षों के उपनिवेशीकरण के बाद 1947 में भारत को अंग्रेजों से आजादी मिली। चीन में भी अक्टूबर 1949 में एक साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई और भारत ने तुरंत 30 दिसम्बर 1949 में पीपुल्स-रिपब्लिक ऑफ चाइना को अपनी मान्यता दे दी। हालांकि चीन ने भारत की स्वतंत्रता को नकली बताया और आशा व्यक्त किया कि भारत एक दिन समाजवादी जनवादी लोकतंत्र के रूप में उभरेगा। नेहरू के मन में हमेशा चीन के लोगों के प्रति सराहना और जुड़ाव रहा। नेहरू एशियाई राष्ट्रवाद के विचार को लेकर बहुत आशावादी थे।

**स्वतंत्रता पश्चात भारत-चीन सम्बन्ध :**

नेहरू चीन के साथ नए रिश्ते बनाने के लिए प्रतिबद्ध थे। प्रारंभ में चीन ने भी भारतीय भावनाओं का पूरे दिल से समर्थन किया। 1950, 1960 के बीच झोउ-एन-लाई ने चार बार भारत का दौरा किया जबकि नेहरू ने दो बार चीन का दौरा किया। उस समय माहौल में हिंदी-चीनी भाई-भाई का उत्साह भर गया था जो भारत के लिए शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का मार्ग था। भारतीय प्रतिनिधि बी.एन राम ने 7 सितम्बर 1950 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में बयान दिया जिसमें चीन की वैध सीट बहाल करने की आवश्यकता पर बल दिया।

**तिब्बत विवाद :** ऐतिहासिक रूप से चीन और तिब्बत के बीच संबंधों की प्रकृति जटिल रही है। 19वीं शताब्दी के दौरान चीन में पश्चिमी घुसपैठ के साथ तिब्बत पर चीन का नियंत्रण कम होता गया। जैसे ही कम्युनिस्टों ने चीन पर कब्जा किया उन्होंने तिब्बत को मुक्त करने के अपने इरादे की घोषणा की। तिब्बत के मुद्दे पर चीनी और भारतीय धारणाओं के बीच मतभेद थे। चीन ने अक्टूबर 1950 को तिब्बत पर हमला किया और उसे नियंत्रित कर लिया जिसे नई दिल्ली में चिंता की दृष्टि से देखा गया। नेहरू ने अप्रैल 1954 में चीन का दौरान किया। उनकी यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच तिब्बत क्षेत्र पर एक समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। इस समझौते से पाँच सिद्धांतों का एक समूह अस्तित्व में आया जिसे बाद में पंचशील (एक दूसरे की क्षेत्रीयता और संप्रभुता के लिए परस्पर सम्मान आपसी अनाक्रामकता, एक दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना, समानता और पारस्परिक लाभ, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व) के नाम से जाना गया। इस समझौते में भारत ने स्वेच्छा से अपने सैन्य, संचार, राजनीतिक और अन्य अधिकार छोड़ दिए जो भारत को 1904 की एंग्लो-तिब्बती संधि के अनुसार अंग्रेजों से विरासत में मिले थे। 1957 में अक्साई चीन रोड ने शिनजियांग को तिब्बत से जोड़ा। जब चीन के सामने यह मुद्दा उठाया गया तो चीन ने इसे आंतरिक मामला बताकर इसका खंडन किया। दलाई लाला का भारत आगमन शायद सबसे महत्वपूर्ण कारक था जिसने भारत-चीन संबंधों की पूरी भावना को बदल दिया।

**1962 युद्ध :** चीन-सोवियत संबंधों में गिरावट गेट लीप फॉरवर्ड (1958-1960) के मद्देनगर चीन में आर्थिक गतिरोधों और उसके बाद पड़ा अकाल, दलाई लामा के भारत भागन और अस्थिर सीमा विवाद, सीमा युद्ध के लिए जिम्मेदार थे। 20 अक्टूबर 1962 को PLA ने पूरी सीमा पर हमला कर दिया। तवांग, वालांग और सेन्ला रिज जैसे भारतीय क्षेत्रों पर चीन ने कब्जा कर लिया। कश्मीर के भारतीय क्षेत्र के 38000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को जब्त कर लिया जिसे वर्तमान में अक्साई चीन के रूप में जाना जाता है। चीनी लद्दाख और नेफा दोनों क्षेत्रों पर प्रभावी नियंत्रण बनाए रखना चाहते थे जिन पर उन्होंने 8 सितम्बर को आक्रमण और 20 अक्टूबर 1962 के बड़े हमल के बाद से कब्जा कर लिया था। भारत के अभिन्न राज्य अरूणाचल प्रदेश (जिसे पहले NEFA) के नाम से जाना जाता था) के 90000 वर्ग किमी क्षेत्र को अपने क्षेत्र के रूप में दावा किया। युद्ध अधिक समय तक नहीं चल सका और चीनी सरकार द्वारा एकतरफा युद्ध विराम की घोषणा कर दी गई लेकिन युद्ध के दौरान कब्जा किए गए क्षेत्र

को छोड़ने के लिए चीन अनिच्छुक था।

**संबंधों का पूर्ण विघटन एवं राजनीतिक संबंधों की पुन:बहाली:**

1962–1975 की अवधि और चीन के बीच संबंधों के पूर्ण विघटन से चिह्नित है। 1976 के बाद से संबंधों में सुधार हुआ जब राजदूत स्तर पर राजनयिक संबंध बहाल किए गए। डॉ. के.आर. नारायणन को जुलाई 1976 में चीन में राजदूत नियुक्त किया गया और उनके समकक्ष चेन झू युआन को सितम्बर 1976 में भारत में चीनी राजदूत नियुक्त किया गया। हुआंग हुआ ने 1981 में भारत–चीन सीमा वार्ता शुरू की और हिंदू तीर्थयात्रियों के लिए तिब्बत में हिंदू देवताओं के पौराणिक कैलाश–मानसरोवर के मार्ग को फिर से खोलने का मार्ग भी प्रशस्त किया। तब से जत्थों में हिंदू तीर्थयात्री आज तक बिना किसी रोक–टोक के कैलाश मानसरोवर की यात्रा करते रहे। इस प्रकार शांतिपूर्ण वार्ता के लिए सीमा वार्ता पुनर्जीवित हुई और उनके द्विपक्षीय व्यापार में सहयोग को सुविधाजनक बनाया गया जिसके परिणामस्वरूप 1984 में व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए गए जिससे एक दूसरे को सबसे पसंदीदा राष्ट्र (MFN) का दर्जा प्राप्त हुआ।

**राजीव गाँधी की चीन यात्रा के पश्चात भारत–चीन सम्बन्ध:**

दिसम्बर 1988 में राजीव गाँधी की ऐतिहासिक चीन यात्रा को भारत–चीन द्विपक्षीय संबंधों के इतिहास में एक मील का पत्थर माना गया। अन्य क्षेत्रों में संबंधों में किसी भी सुधार के लिए पूर्व शर्त के रूप में सीमा के समाधान वाले विचार को पीछे छोड़ दिया गया। डेंग ने नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था (NIEO) स्थापित करने में भारत से सहयोग मांगा। चीन–भारत सीमा वार्ता (1981–1987) के आठ दौरों के आलोक में भारत ने स्वीकार किया। चीन–भारत सीमा कुछ हिस्सों में चिह्नत और विवादित थी और चीन की वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर शांति की लंबे समय से चली आ रही मांग को स्वीकार कर लिया। फरवरी 1991 में बॉम्बे और शंघाई में वाणिज्य दूतावास को फिर से खोलने का निर्णय लिया गया। इसके बाद भारतीय वाणिज्य मंत्री सुब्रमण्यम स्वामी की बीजिंग यात्रा हुई जिसके तहत दोनों पक्ष सीमा व्यापार पर सहमत हुए। 1991 में प्रधानमंत्री ली पेंग ने भारत का दौरा किया। दशकों के निलंबन के बाद प्रधानमंत्री स्तर की आपसी यात्राएँ बहाल हो गईं।

1992 भारतीय राष्ट्रपति और सर वेंकट रमन ने चीन का दौरा किया। वह पहले राष्ट्रपति थे जिन्होंने भारत गणराज्य की स्वतंत्रता के बाद चीन का दौरा किया। 1993 में भारतीय प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने चीन का दौरा किया। भारत–चीन सीमा क्षेत्रों में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शांति बनाए रखने के लिए चीन सरकार और भारत सरकार के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। 1996 में राष्ट्रपति जियांग जेमिन ने भारत का दौरा किया। वह द्विपक्षीय संबंधों की स्थापना के बाद से भारत का दौरा करने वाले चीन के पहले राष्ट्राध्यक्ष थे। दोनों पक्ष 21वीं सदी की ओर उन्मुख सहयोग की रचनात्मक साझेदारी बनाने पर सहमत हुए।

2000 में भारतीय राष्ट्रपति के.आर.नारायणन ने चीन और भारत के बीच राजनयिक संबंध की स्थापना की। 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर चीन का दौरा किया। 2002 में प्रधानमंत्री झू रोंगजी ने भारत का दौरा किया। दोनों पक्ष आपसी समझ और विश्वास बढ़ाने और विभिन्न क्षेत्रों में आदान–प्रदान और सहयोग को बढ़ावा देने पर सहमत हुए। 2003 में प्रधानमंत्री वाजपेयी ने चीन का दौरा किया। दोनों पक्षों ने चीन–भारत संबंधों में सिद्धांतों और व्यापक सहयोग घोषणा पर हस्ताक्षर किए और भारत–चीन सीमा प्रश्न पर विशेष प्रतिनिधि बैठक तंत्र स्थापित करने पर सहमति व्यक्त की। 2005 में प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ ने भारत का दौरा किया। चीन और भारत ने संयुक्त वक्तव्य पर हस्ताक्षर किए और शांति समृद्धि के लिए रणनीतिक और सहकारी साझेदारी की घोषणा की। राष्ट्रप्रति हू जिताओ ने नम्बर 2006 में नई दिल्ली में राष्ट्रपति अब्दुल कलाम से मुलाकात की। दोनों पक्षों ने रणनीतिक और सहकारी साझेदारी को गहरा करने के लिए दस–आयामी रणनीति तैयार करने के लिए एक संयुक्त घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए। 2008 में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने चीन का दौरा किया। दोनों सरकारों द्वारा 21वीं सदी के लिए एक साझा दृष्टिकोण पर सहमति व्यक्त की गई।

2010 में राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने चीन का दौरा किया जो चीन और भारत के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगांठ के अवसर पर हुआ था। 2011 चीन–भारत विनियम वर्ष था। दोनों पक्षों ने सांस्कृति आदान–प्रदान गतिविधियों की एक श्रृंखला आयोजित की और भारत–चीन सांस्कृतिक संपर्को का विश्वकोश के संयुक्त संकलन पर हस्ताक्षर किए। 2012 चीन भारत मैत्री और सहयोग का वर्ष था। राष्ट्रपति हू जितंताओ और प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ ने चौथे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन और सतत विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के मौके पर क्रमश: प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह से मुलाकात की।

2014 चीन–भारत मैत्रीपूर्ण विनियम वर्ष था। सितम्बर में राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने भारत की राजकीय यात्रा की और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के गृह राज्य गुजरात का दौरा किया। दोनों पक्षों ने घनिष्ठ विकासात्मक साझेदारी का निर्माण पर संयुक्त वक्तव्य जारी किया। 2015 में प्रधानमंत्री मोदी ने चीन का दौरा

किया और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के गृहनगर सीआन गए। उसी वर्ष राष्ट्रपति शी जिनपंग और प्रधानमंत्री ली केकियांग ने क्रमशः उफा में 7वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन और मलेशिया में पूर्वी एशिया सहयोग पर नेताओं की बैठक के मौके पर प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात की। चीन ने भारतीय आधिकारिक तीर्थयात्रियों के लिए नाथू ला दर्रा खोलने का निर्णय लिया। भारत ने चीन में भारत पर्यटन वर्ष मनाया। 2016 में भारतीय राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने चीन का दौरा किया। प्रधानमंत्री मोदी ने हांगझू में जी 20 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए चीन का दौरा किया और राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात की।

राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने गोवा में 8वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया और मौके पर प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात की। चीन भारत में चीन पर्यटन वर्ष मनाया। 2017 में राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अस्ताना में एससीओ शिखर सम्मेलन के मौके पर प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात की। 2018 में राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने वुहान में भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ एक अनौपचारिक बैठक की। उनके बीच गहन चर्चा हुई और वैश्विक और द्विपक्षीय महत्व के व्यापक, दीर्घकालिक और रणनीतिक मुद्दों और राष्ट्रीय विकास के साथ-साथ घरेलू और विदेशी नीतियों के लिए उनके संबंधित दृष्टिकोण पर व्यापक सहमति बनी। अनौपचारिक बैठक ने दो नेताओं के बीच आदान-प्रदान का एक नया मॉडल स्थापित किया और द्विपक्षीय संबंधों के इतिहास में एक मील का पत्थर बन गया। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अप्रैल 2018 में वुहान में भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ एक अनौपचारिक बैठक की। 2019 में राष्ट्रपति शी जिनपिंग और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चेन्नई में दूसरी अनौपचारिक बैठक की वुहान सर्वसम्मति की पुष्टि की और विकास के लिए घनिष्ठ साझेदारी बढ़ाने, गहन रणनीतिक संचार बढ़ाने, विभिन्न क्षेत्रों में पारस्परिक रूप से लाभप्रद सहयोग को बढ़ावा देने, दोनों सभ्यताओं के बीच आदान-प्रदान और आपसी सीख पर सहमति व्यक्त की। 2020 में चीन और भारत के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना हुई। यह चीन-भारत सांस्कृतिक और लोगों के बीच आदान-प्रदान का वर्ष भी था। दोनों पक्ष दोनों सभ्यताओं के बीच ऐतिहासिक संबंधों के साथ-साथ वर्षों से बढ़ते द्विपक्षीय संबंधों को प्रदर्शित करने के लिए 70 उत्सव गतिविधियों का आयोजन करने और दोनों देशों के बीच सभी स्तरों जैसे विधायिका, व्यवसाय, शिक्षा, सांस्कृतिक और युवा संगठन और साथ ही रक्षा बल के बीच आदान-प्रदान करने पर सहमत हुए।

**निष्कर्षः**

भारत और चीन के बीच संबंध एक बहुआयामी और विकासशील कथा है। सदियों के सांस्कृतिक आदान-प्रदान आर्थिक परस्पर निर्भरता और भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता से आकार लेती है। जैसे-जैसे दोनों देश वैश्विक मंच पर आगे बढ़ रहे हैं उनकी बातचीत व्यापक एशियाई क्षेत्र और दुनिया की स्थिरता और विकास में एक महत्वपूर्ण कारक बनी रहेगी। दुनिया के दो सबसे अधिक आबादी वाले और आर्थिक रूप से प्रभावाली देशों के रूप में भारत-चीन संबंधों का प्रक्षेप पथ अंतरराष्ट्रीय संबंधों के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः**


1. दीपक.बी.आर (2005), इंडिया एंड चाइना 1904-2005 : ए सेंचुरी ऑफ पीस एंड कनफ्लिक्ट न्यू डेल्ही, मानक पब्लिकेशंस।
2. मुखजी, पारमिता देब अर्नब., एंड पांग, मिआओ, (2021), चाइना एंड इंडिया हिस्ट्री कल्चर कोऑपरेशन एंड कम्पीटीशन इंडिया, सेज पब्लिकेशंस।
3. राव, निरुपमा (2022), द फ्रैकचर्ड हिमालया, इंडिया,तिब्बत, चाईना (1949-1962) इंडिया पेंगुइन
4. सिरोही, आर.के. (2013), सुप्रेमैसी ऑफ चाइना ओवर तिब्बत, न्यू देल्ही प्रशांत पब्लिशिंग हाउस
5. दास, गौतम (2016) सेक्यूरिंग इंडियाज बोर्डर चैलेंजेज एंड पालिसी ऑप्शंस इंडिया पेटागन प्रेस
6. साव्हने, प्रवीण (2022) द लास्ट वोंर हाउ ए आई विल शेप इंडियाज फाइनल सो डाउन विथ चाइना इंडिया अलेफ बुक कंपनी।
7. शॉरी, अरूण (2013) सेल्प-डिसेप्शन इंडियाज चाइना पॉलिसीस ओरिजिन्स, प्रेमिसेस लेशन्स न्यू देल्ही, हार्परकॉलिस।
8. राव, निरूपमा (2018, मई 03) व्हेन इंडिया एंड चाइना मीट द हिन्दू
9. राज मोहन, (सी 2019 अक्टूबर) विथ चाइना, इंडिया मस्ट रेकोंगनाइज पावर इम्बैंलैस, लिबरेट इट सेल्फ फ्रॉम प्रोलोंगड इलुशन्स, फाल्स होप्स, द इंडियन एक्सप्रेस।
10. नारायण, एम. के. (2020, सितम्बर 22), इंटरप्रेटिंग द इंडिया-चाइना कन्वेर्सेशन. द हिन्दू।


❖❖❖